A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 02, April 2026 (Special Issue)

This paper was presented at the 'Swar Sanskar National Seminar', organized by Swar Sanskar Sangeet Gurukul
Seminar Convener: Dr. Yash Sanjay Dewale (Co-Founder: Swar Sanskar Sangeet Gurukul, Assistant Professor: MSU Baroda)

# हिंदी फिल्म संगीत के परिप्रेक्ष्य में खय्याम की संगीत रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

**Nitesh Kumar**
Researcher Instrumental, Department Department of Performing Arts, Maharaja Sayajirao University, Vadodara
**Dr. Yash Dewale**
Research Director, Department Department of Performing Arts, Maharaja Sayajirao University, Vadodara

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Published on 30 April, 2026

**सार**
*फ़िल्मी संगीत में ख़य्याम की रचनाओं का एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान दिखाई देता है, जहाँ उनके ग़ज़लनुमा संगीत की मधुरता स्पष्ट रूप से महसूस की जा सकती है। उन्होंने अपनी अलग शैली में फ़िल्मी गीतों को स्वरबद्ध किया, जिसमें ग़ज़ल की कोमलता के साथ-साथ शास्त्रीय संगीत की झलक भी मिलती है। ख़य्याम ने कविता, ग़ज़ल और नज़्म जैसी साहित्यिक विधाओं को फ़िल्मी गीतों के माध्यम से अमर बना दिया। उनकी रचनाएँ कलात्मक गरिमा और संवेदनशीलता से परिपूर्ण हैं। उदाहरण के रूप में 'फिर छिड़ी रात बात फूलों की', 'हज़ार राहें' और 'ऐ दिल-ए-नादान' जैसे गीत उनकी उत्कृष्टता को दर्शाते हैं। ख़य्याम की रचनाओं में साहित्यिकता हमेशा प्रमुख रहती है, जहाँ कविता और शायरी को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का पूरा अवसर मिलता है। उनकी हर धुन उच्च कोटि के साहित्य को उजागर करती है। उनकी संगीत शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं—ठहराव, राग-आधारित संरचना और ग़ज़लनुमा प्रस्तुति। इन गुणों के कारण उनकी रचनाओं में साहित्यिक संवेदना और शास्त्रीय संगीत का संतुलित तथा प्रभावशाली समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने संयमित ऑर्केस्ट्रेशन, रागों पर आधारित धुनों और सूक्ष्म भावाभिव्यक्ति के माध्यम से फ़िल्मी संगीत को एक गरिमामय और सम्मानजनक स्वरूप प्रदान किया। उनकी संगीत रचनाएँ केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं हैं, बल्कि वे गहन भावनाओं और संगीत की गहरी समझ का सजीव उदाहरण हैं। इसी के माध्यम से फ़िल्मी संगीत को एक विशिष्ट और परिष्कृत दिशा मिली।*
*मुख्य शब्द: खय्याम, हिंदी फिल्म संगीत, संगीत निर्देशन, ग़ज़ल शैली, संगीत संरचना, फिल्मी गीत, काव्यात्मक अभिव्यक्ति, विश्लेषणात्मक अध्ययन |*

## प्रस्तावना

हमारे भारतीय फ़िल्मी संगीत में गीत, ग़ज़ल, नज़्म आदि के रूप में सुंदर रचनाओं का स्पष्ट प्रतिबिंब दिखाई देता है। इन फ़िल्मी धुनों को अनेक महान संगीतकारों ने सृजित किया है, जैसे—नौशाद, मदन मोहन, ओ. पी. नैयर, आर. डी. बर्मन और लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल। वास्तव में, किसी भी गीत की कल्पना संगीतकार के बिना संभव नहीं है। धुन और शब्दों के मेल से श्रोता प्रेम, विरह, करुणा और देशभक्ति जैसी भावनाओं से जुड़ पाता है और संगीत का पूर्ण आनंद लेता है। भारतीय संगीत जगत में कई ऐसे संगीतकार हुए हैं जिन्होंने अपनी धुनों के माध्यम से गीतों और ग़ज़लों को विशिष्ट रूप में प्रस्तुत किया। इन्हीं में एक महत्वपूर्ण नाम संगीतकार ख़य्याम का है, जिनका जन्म 18 फ़रवरी 1927 को पंजाब में हुआ था। ख़य्याम ने अपनी रचनाओं और धुनों के माध्यम से उत्कृष्ट फ़िल्मी संगीत प्रस्तुत किया। उनकी संगीत शैली में साहित्यिक गहराई और काव्यात्मक समृद्धि स्पष्ट रूप से अनुभव होती है। उन्होंने अपने फ़िल्मी संगीत में देशभक्ति, ग़ज़ल, भजन और गीत जैसी विधाओं को सृजित कर उन्हें प्रभावशाली ढंग से श्रोताओं तक पहुँचाया।

## साहित्य समीक्षा

खय्याम द मैन हिज़ – म्यूज़िक में खय्याम के संपूर्ण संगीत योगदान का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में उनके फ़िल्मी एवं गैर-फ़िल्मी संगीत के साथ-साथ दूरदर्शन धारावाहिकों, वाद्य-संगीत तथा जीवन परिचय से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है, जो उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को समझने में सहायक है (Nerurkar & Chatterjee, 2006)।

धुनों की यात्रा: हिन्दी फिल्मों के संगीतकार में विभिन्न संगीतकारों की संगीत निर्देशन शैली का विश्लेषण किया गया है। इसके अंतर्गत खय्याम की ग़ज़लों तथा उनकी गैर-फ़िल्मी रचनाओं पर भी प्रकाश डाला गया है, जिससे उनके संगीत की विशिष्टता और गहराई का बोध होता है (Rag, 2006)।

यादों का कारवाँ में खय्याम साहब तथा Mohammed Rafi की गैर-फ़िल्मी रचनाओं का उल्लेख मिलता है। साथ ही, 1970 के दशक के उस दौर का भी वर्णन किया गया है, जब एक्शन फिल्मों के प्रभाव के कारण संगीत अपनी मधुरता खो रहा था। ऐसे समय में खय्याम ने *"कभी-कभी"* जैसी फिल्मों के माध्यम से मधुर एवं संवेदनशील संगीत प्रस्तुत किया (Author, Year)।

**शोध प्रविधि -**

इस अध्ययन में गुणात्मक और ऐतिहासिक–वर्णात्मक शोध पद्धति को अपनाया गया है, जिससे फ़िल्मी संगीत में ख़य्याम साहब की धुनों की विशिष्टता और उनके योगदान को गहराई से समझने का अवसर मिलता है। इस शोध में सांख्यिकीय माप या गणनाओं का उपयोग नहीं किया गया है; मुख्य रूप से डेटा शब्दों, भावों, अर्थ और संगीत अनुभव पर आधारित है। प्राथमिक स्रोतों में ख़य्याम के गीत, भजन और ग़ज़लें शामिल हैं, जबकि द्वितीयक स्रोतों में समीक्षाएँ और आलेख सम्मिलित किए गए हैं। इस प्रकार डेटा वर्णनात्मक और अनुभवजन्य है, जो साहित्य और संगीत के समन्वय को समझने में सहायक है।

शोध की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए प्राप्त डेटा का कई स्तरों पर क्रॉस-चेक किया गया। इसमें विभिन्न रिकॉर्डिंग्स में गायन और संगीत की समानता तथा भिन्नताओं की जांच, विशेषज्ञों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन और प्रकाशित शोध साहित्य का विश्लेषण शामिल है। इसके अतिरिक्त, उपलब्ध सभी स्रोतों की प्रमाणिकता को ध्यान में रखते हुए निष्कर्षों का अवलोकन और विश्लेषण किया गया है।

## चर्चा

खय्याम हिंदी फिल्म संगीत के एक विशिष्ट संगीतकार हैं, जिनकी रचनाओं में शास्त्रीय आधार, मधुरता और भावप्रवणता का संतुलन देखने को मिलता है। उन्होंने प्रचलित धारा से अलग हटकर संगीत को अधिक काव्यात्मक और अभिव्यक्तिपूर्ण रूप प्रदान किया। उनकी ग़ज़ल-आधारित धुनों में शब्दों की प्रधानता स्पष्ट दिखाई देती है, जिससे गीत अधिक प्रभावशाली बन जाते हैं। सीमित वाद्ययंत्रों और सरल संयोजन के माध्यम से उन्होंने संगीत में सादगी बनाए रखी। अतः उनकी रचनाएँ हिंदी फिल्म संगीत में एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

## हिंदी फ़िल्म संगीत में संगीत रचनाओं की एतिहासिक पृष्ठभूमि –

प्राचीन समय से ही भारतीय फ़िल्मी संगीत में धुनों के रूप में विविध संगीत रचनाएँ विद्यमान रही हैं। इनमें प्रेम, विरह, करुणा, देशभक्ति आदि सभी प्रकार के भावों को व्यक्त करने वाले गीत शामिल रहे हैं। ये संगीत रचनाएँ संगीतकारों की विशिष्ट शैली में तैयार की जाती हैं, जिन्हें गायक–गायिकाएँ अपनी आवाज़ देकर जीवंत बनाते हैं। इन फ़िल्मी गीतों ने आम जनमानस के बीच अपनी अलग पहचान बनाई और श्रोताओं को अपनी ओर आकर्षित किया। इन विशेष धुनों, समृद्ध साहित्य, चित्रपट की आवश्यकता और संगीतकारों के निर्देशन के समन्वय से ही ऐसी रचनाएँ संभव हो पाती हैं।

यदि फ़िल्मी संगीत रचनाओं के इतिहास पर दृष्टि डालें, तो भारत की पहली बोलती फ़िल्म 'आलम आरा' में संगीत का प्रारंभिक स्वरूप देखने को मिलता है। इस फ़िल्म में लगभग सात गीत शामिल थे, जिनका संगीत निर्देशन फिरोजशाह मिस्त्री ने किया था। इस फ़िल्म का प्रसिद्ध गीत 'दे दे ख़ुदा के नाम पर' था, जिसे फ़िल्म में फ़क़ीर की भूमिका निभाने वाले मुहम्मद खान ने स्वयं गाया था। उस समय इन गीतों में मुख्यतः तबला, हारमोनियम और वायलिन जैसे सीमित वाद्यों का ही प्रयोग किया गया था। साथ ही, ध्वनि को रिकॉर्ड और प्रस्तुत करने के लिए प्रारंभिक तकनीकों का उपयोग किया जाता था। इसके बाद से ही फ़िल्मों में संगीत ने एक सशक्त और स्थायी स्थान बना लिया। (आलम आरा) फ़िल्मी रचनाएँ ऐसी सृजनात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं, जो लोगों के दिलों में गहराई से बसी हुई हैं। हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में किसी फ़िल्मी गीत से भावनात्मक रूप से जुड़ा होता है। उदाहरण के लिए, फ़िल्म *शाहजहाँ* का गीत "जब दिल ही टूट गया", जिसे सैगल साहब ने गाया था, विरह और बिछड़ने की पीड़ा को मार्मिक ढंग से व्यक्त करता है। इसी तरह "मेरे देश की धरती" (फ़िल्म *उपकार*) जैसे गीत देशभक्ति की भावना को प्रबल करते हैं और श्रोताओं के मन में अपने देश के प्रति प्रेम जगाते हैं।

इसके अतिरिक्त, फ़िल्म *प्यासा* (1957) का गीत "ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है", जिसे रफ़ी साहब ने स्वर दिया, साहिर लुधियानवी की लेखनी और एस. डी. बर्मन के संगीत निर्देशन का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह रचना मानव मन की गहरी संवेदनाओं और अंतर्द्वंद्व को व्यक्त करती है। ऐसी सभी रचनाएँ संगीतकारों के सूक्ष्म और गहन निर्देशन का परिणाम होती हैं। लंबे समय तक लोग विभिन्न माध्यमों से इन संगीत रचनाओं का आनंद लेते रहे हैं। रेडियो सीलोन पर हर बुधवार प्रसारित होने वाला अमीन सयानी का लोकप्रिय कार्यक्रम "बिनाका गीतमाला" श्रोताओं के बीच अत्यंत प्रिय रहा। इस कार्यक्रम के माध्यम से मोहम्मद रफ़ी, लता मंगेशकर, आशा भोसले, हेमंत कुमार, मुकेश, तलत महमूद और किशोर कुमार जैसे महान गायकों के गीत लोगों के दिलों में बस गए। यदि एक ओर *मुगल-ए-आज़म* (1960) का गीत "प्यार किया तो डरना क्या" अपनी भव्यता और प्रेम की निर्भीक अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है, तो दूसरी ओर *कागज़ के फूल* (1959) का "वक्त ने किया क्या हसीं सितम" जीवन की अनिवार्यता और समय के प्रभाव को अत्यंत संवेदनशीलता से प्रस्तुत करता है। इस प्रकार, फ़िल्मी संगीत की ये रचनाएँ न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि मानवीय भावनाओं की गहरी अभिव्यक्ति भी हैं। (khurana)

फ़िल्मी संगीत में उत्कृष्ट भजन रचनाओं का भी विशेष स्थान रहा है। इन रचनाओं के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति भक्ति भाव का अनुभव कर पाता है, इसलिए प्रारंभ से ही भजन फ़िल्मी संगीत का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। हिंदी फ़िल्मों में ईश्वर को अनेक सुंदर गीतों और भजनों के माध्यम से स्मरण किया गया है। सामान्यतः विपत्ति के समय व्यक्ति ईश्वर को याद करता है, और यही भाव फ़िल्मों में भी दिखाई देता है, जहाँ दुख की घड़ी में नायक या नायिका प्रभु से प्रार्थना करते नज़र आते हैं। पुरानी और नई सभी प्रकार की फ़िल्मों में ईश्वर-भक्ति से जुड़े श्रेष्ठ गीत रचे जाते रहे हैं। मधुर संगीत और महान गायकों की प्रभावशाली प्रस्तुति ने इन भजनों को और भी भावपूर्ण बना दिया है, जिससे श्रोता भक्ति रस में डूब जाते हैं। ऐसे ही भावविभोर करने वाले भजनों में "बड़ी देर भई नंदलाला, तेरी राह तके बृजबाला" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वर्ष 1965 में प्रदर्शित फ़िल्म *खानदान* का यह भजन सुनील दत्त पर फिल्माया गया था। राजेंद्र कृष्ण द्वारा लिखित इस गीत को मोहम्मद रफ़ी ने अपनी मधुर आवाज़ दी है, जो आज भी जन्माष्टमी के पावन अवसर पर पूरे देश में गूंजता है। इस भजन में संगीतकार रवि का सुमधुर संगीत इसे और भी प्रभावशाली बनाता है। फ़िल्म की कथा के संदर्भ में भी यह गीत अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।(team, A, U, D)

इसी प्रकार फ़िल्मी संगीत में हमें विविध और अद्भुत रचनाओं का व्यापक रूप देखने को मिलता है, जो समय के साथ निरंतर परिवर्तित होता रहा है। अलग-अलग संगीतकारों ने अपनी विशिष्ट निर्देशन शैली के माध्यम से फ़िल्मी संगीत को नई-नई रचनाएँ प्रदान की हैं। प्रत्येक संगीतकार की शैली भिन्न होने के कारण उनकी रचनाएँ भी एक-दूसरे से अलग सुनाई देती हैं। किसी रचना में लोकगीतों की झलक मिलती है, तो किसी में शास्त्रीय संगीत के तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। वहीं कुछ रचनाओं में वाद्ययंत्रों का व्यापक और सृजनात्मक प्रयोग देखने को मिलता है। इस प्रकार विविधता होने के बावजूद, प्रत्येक संगीतकार की रचनाएँ फ़िल्मी संगीत में विभिन्न भावों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने में सक्षम होती हैं।

## खय्याम संगीत के सौंदर्यशास्त्री

**जीवन परिचय -**

संगीतकार ख़य्याम का जन्म सन् 1927 में पंजाब के जालंधर ज़िले के राहों गाँव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम मुहम्मद ज़हूर था। उन्होंने अपने संगीत प्रशिक्षण की शुरुआत पंडित अमरनाथ के मार्गदर्शन में की तथा बाद में प्रसिद्ध संगीतकार जोड़ी हुस्नलाल–भगतराम से संगीत की गहन शिक्षा प्राप्त की। (Down Melody Lane)

**फिल्मी संगीत में खय्याम की संगीत रचनाओं की विशेषता –**

फ़िल्म संगीत में ख़य्याम साहब को वास्तविक पहचान फ़िल्म *शोला और शबनम* के गीतों से मिली। उनकी रचनाओं में "बहारों मेरा जीवन भी संवारो", "वो सुबह कभी तो आएगी", "इन आँखों की मस्ती के" और "कभी-कभी मेरे दिल में ख़याल आता है" जैसे अनेक प्रसिद्ध गीत शामिल हैं, जिन्हें आज भी बड़े प्रेम से याद किया जाता है। ख़य्याम साहब के सभी गीत मधुरता से परिपूर्ण होते हैं, जिनमें ग़ज़ल शैली का कोमल और स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। उनकी संगीत रचनाएँ संवेदनशीलता, सरलता और भावनात्मक गहराई का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। (Bollywood) फ़िल्म *उमराव जान* के लिए संगीत देने से पहले ख़य्याम साहब ने केवल उपन्यास को पढ़ा ही नहीं, बल्कि उस दौर की सांस्कृतिक और संगीतात्मक पृष्ठभूमि को भी गहराई से समझा। उन्होंने उस समय प्रचलित रागों, पहनावे, भाषा और वातावरण का सूक्ष्म अध्ययन किया। इसके बाद ही उन्होंने इस फ़िल्म के लिए संगीत देने का निर्णय लिया। इस फ़िल्म के सभी गीत अत्यंत लोकप्रिय हुए, जैसे—"ये क्या जगह है दोस्तों", "इन आँखों की मस्ती के" और "जुस्तजू जिसकी थी" आदि। इस उत्कृष्ट कार्य के लिए ख़य्याम साहब को राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

इसी प्रकार फ़िल्म *शगुन* (1964) का गीत "तुम अपना रंज-ओ-ग़म" ख़य्याम की प्रमुख रचनाओं में से एक माना जाता है। इस गीत में उन्होंने अपने संगीत के माध्यम से प्रेमिका के समर्पण और भावनाओं को अत्यंत संवेदनशील ढंग से व्यक्त किया है। इस गीत को उनकी पत्नी ने स्वर दिया था। यहाँ भी ख़य्याम ने अपनी विशिष्ट शैली के अनुरूप गायक की अभिव्यक्ति और गीत के साहित्य को प्रमुखता दी है। इस गीत के बोल साहिर लुधियानवी द्वारा लिखे गए थे। संगीत संयोजन में अन्य वाद्ययंत्रों के साथ पियानो का प्रभाव विशेष रूप से उभरकर सामने आता है, जो इस रचना को एक अलग ही गरिमा प्रदान करता है। (Dustedoff)

"फिर छिड़ी रात, बात फूलों की" गीत मख़दूम मोहिउद्दीन द्वारा रचित है, जिसे ख़य्याम ने संगीतबद्ध किया। यह फ़िल्म *बाज़ार* का अत्यंत भावपूर्ण और संवेदनशील गीत है। ख़य्याम ने इस रचना में कविता के भावों को बड़ी सादगी और नज़ाकत के साथ धुन में पिरोया है। इसकी धीमी और कोमल लय शब्दों की सुंदरता तथा उनके अर्थ को स्पष्ट रूप से उभारती है।

इस गीत के संगीत में अनावश्यक सजावट या जटिलता नहीं है, जिससे इसकी प्रभावशीलता और भी बढ़ जाती है तथा भावों की गहराई सहज रूप में सामने आती है। ख़य्याम का संगीत केवल सुनने का अनुभव नहीं देता, बल्कि श्रोता को गीत के भाव और अर्थ को समझने और महसूस करने की दिशा भी प्रदान करता है। इस प्रकार, यह रचना साहित्य और संगीत के सुंदर समन्वय का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। (Khan) फ़िल्म *आखिरी ख़त* (1966) का गीत "बहारों मेरा जीवन भी संवारो" एक ऐतिहासिक और अत्यंत मधुर रचना है, जिसे लता मंगेशकर ने अपनी स्वरमधुर

आवाज़ में प्रस्तुत किया। ख़य्याम ने इस गीत में कोमलता, संवेदनशीलता और प्रेम की आशा को खूबसूरती से संजोया है। उन्होंने इसे अपने पसंदीदा राग **पहाड़ी** में संगीतबद्ध किया। गीतकार साहिर लुधियानवी द्वारा रचित इस गीत में भावनाओं की गहराई और शब्दों की मिठास स्पष्ट रूप से झलकती है।

गीत की शुरुआत में संतूर और सितार की मधुर ध्वनि प्रेम की खुशबू बिखेरती है, जबकि बांसुरी की उदास और सरस धुन और जोशीले तबले की ताल पूरे गीत में भावनात्मक गहराई जोड़ती है। गीत में एक पहाड़ी लड़की अकेले गुनगुना रही है, जो किसी प्रिय व्यक्ति के आने और अपने जीवन को प्रेम से भरने का सपना देखती है। ख़य्याम साहब ने इस गीत को बहुत ही संजीदगी और नज़ाकत के साथ रचा है। आज भी यह गीत संगीत प्रेमियों के बीच अत्यंत लोकप्रिय और प्रिय माना जाता है, और इसकी मधुरता एवं भावनात्मक असर श्रोताओं के मन में गहरा प्रभाव छोड़ता है| (Deepa) संगीतकार ख़य्याम की रचनाएँ उन्हें फ़िल्मी संगीत में एक विशिष्ट और अलग मुकाम प्रदान करती हैं। उन्होंने अपनी संगीत रचनाओं के माध्यम से ग़ज़ल, गीत, भजन जैसी विधाओं में भावनात्मक गहराई और संवेदनशीलता को जीवंत किया। उनकी धुनों में शब्दों के अर्थ और भाव का सूक्ष्म संतुलन स्पष्ट रूप से सुनाई देता है, जो श्रोताओं को सीधे संगीत और साहित्य के अनुभव से जोड़ता है।

ख़य्याम के संगीत में एक अलग प्रकार का संतुलन दिखाई देता है, जिसमें ग़ज़ल के तत्व, ठहराव, साहित्यिक समृद्धि और भावनात्मक विस्तार शामिल हैं। उनके फ़िल्मी संगीत में यह विशेषता साफ़ झलकती है। उनकी रचनाओं में गहरे साहित्यिक तत्वों का संयोजन भी देखा जा सकता है, जैसे फ़िल्में *रज़िया सुल्तान*, *उमराव जान*, *नूरी* और *कभी-कभी*। इन फ़िल्मों के गीत श्रोताओं द्वारा अत्यंत पसंद किए जाते हैं और इन्हें ख़य्याम के संगीत और उत्कृष्ट रचनात्मक समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

## परिणाम

फ़िल्मी संगीत में संगीतकार ख़य्याम की रचनाओं की विशिष्टता स्पष्ट रूप से झलकती है, जहाँ शब्दों और धुन के साथ-साथ गायिकी को भी प्रमुखता दी जाती है। उन्होंने निदा फ़ाज़ली, साहिर लुधियानवी, गुलज़ार, मख़दूम मोहिउद्दीन और शकील बदायूनी जैसे प्रतिभाशाली रचनाकारों की काव्य रचनाओं को भावपूर्ण संगीत में ढालकर और भी प्रभावशाली बनाया। उनकी धुनों में सादगी, ठहराव और संवेदनशीलता का अद्भुत संतुलन देखने को मिलता है, जिससे कविता का अर्थ और भाव श्रोताओं तक सहज और स्पष्ट रूप से पहुँचते हैं। ख़य्याम संगीत को केवल मनोरंजन का साधन नहीं मानते थे, बल्कि इसे विशेष भावों और संवेदनाओं को व्यक्त करने का माध्यम मानते थे।

उनकी रचनाएँ—फ़िल्मी गीतों से लेकर गैर-फ़िल्मी भजनों और ग़ज़लों तक—सभी में भावों की सच्चाई और गहनता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। ख़य्याम की संगीतबद्ध धुनें श्रोताओं को केवल सुनाने तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि उन्हें एक भावनात्मक यात्रा पर ले जाती हैं, जो संगीत और शब्दों के सृजनात्मक संवाद का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

## सारांश -

भारतीय संगीत में फ़िल्मी संगीत निर्देशन एक ऐसी विधा रही है, जिसने भावनाओं, संवेदनाओं और संस्कृति को गहराई से जोड़कर प्रस्तुत किया है। प्रारंभिक काल से आधुनिक युग तक, संगीत और फ़िल्मी रचनाओं का संबंध निरंतर बना रहा है। फ़िल्मी संगीत, संगीत रचनाओं के माध्यम से, धुनों में प्रत्येक भाव को प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करने का एक सशक्त साधन बनता है। संगीतकार ख़य्याम ऐसे रचनाकार थे जिन्होंने संगीत की गहनता को समझते हुए अपनी प्रत्येक धुन—चाहे वह गीत हो, भजन हो या ग़ज़ल—में भावनाओं की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति की। अपने संगीत के माध्यम से उन्होंने आम जनमानस को साहित्य से जोड़ा और कविता तथा ग़ज़ल जैसी विधाओं को स्थायित्व और लोकप्रियता प्रदान की। ख़य्याम ने फ़िल्मी संगीत को नए आयाम दिए। उनकी धुनों में शास्त्रीयता और आधुनिकता का संतुलित मिश्रण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उन्होंने कवियों और गीतकारों के शब्दों को संगीत के माध्यम से जीवंत अभिव्यक्ति दी और साहित्य को लोकप्रिय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बनाया। ख़य्याम साहब के लिए धुन और फ़िल्मी संगीत रचनाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं थीं, बल्कि भावनाओं की अभिव्यक्ति की एक सशक्त और संवेदनशील प्रक्रिया थीं।

## मुख्य बिन्दु -

- शुरुआत से लेकर आधुनिक काल तक संगीत रचनाओं का संगीत में स्वरूप |
- साहिर लुधियानवी, निदा फ़ाज़ली, गुलज़ार, मखदूम, शकील बदायूनी, मधुकर राजस्थानी आदि की रचनाओं को उन्होंने भावपूर्ण और प्रभावशाली धुनों में रूपांतरित किया |
- ख़य्याम साहब का जन्म सन् 1927 पंजाब में |
- ग़ज़ल, भजन, गीत, आदि और फिल्मी संगीत में सांगीतिक रचनाओं और सांगीतिक सौन्दर्य का संयोजन |
- उनकी धुनों में सादगी, ठहराव, संवेदनशीलता और शास्त्रीय संगीत का संतुलन, जिससे प्रेम, दुख, भक्ति , देश भक्ति, आदि भावों को श्रोता सहज और गहरे रूप से महसूस कर पाता है |

- उमराओ जान, कभी – कभी, फिर सुबह होगी जैसी फिल्मों में यादगार संगीत |
- खय्याम ने फिल्मी संगीत को अपनी संगीत रचनाओं के जरिए सांस्कृतिक चेतन का अंग बनाया |
- फिल्मी संगीत में खय्याम साहब की संगीत रचनाओं ने जनमानस के अनुभवों, संवेदनाओ, और भावो को संगीत से जोड़ा |

## संदर्भ ग्रंथ

"आलम आरा." (n.d.). Bharat Discovery. https://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%86%E0%A4%B2%E0%A4%AE_%E0%A4%86%E0%A4%B0%E0%A4%BE

Deepa. (2023, January 3). Indian solitary reaper – Baharon mera jeevan bhi sanwaro – Aakhri Khat. TheSongPedia. https://thesongpedia.com/indian-solitary-reaper-baharon-mera-jeevan-bhi-sanwaro-aakhri-khat/

Khan, Y. (n.d.). Phir chhidi raat baat phoolon ki. Radiovani Blogspot. https://radiovani.blogspot.com/2008/02/phir-chidi-raat-baat-phoolon-ki-film.html

Khurana, S. (2021, October 5). 75 top songs from Hindi cinema that shaped our lives and history. The Indian Express. https://indianexpress.com/article/express-sunday-eye/75-top-songs-from-hindi-cinema-that-shaped-our-lives-and-history-7547844/

Nerurkar, V., & Chatterjee, B. (Eds.). (2006). Khayyam: The man—his music. Gayatri Publication & Jeevangani.

Rag, P. (2006). धुनों की यात्रा: हिन्दी फिल्मों के संगीतकार. Rajkamal Prakashan.

Team, A. U. D. (2017, July 1). हिंदी फ़िल्मों के ऐसे यादगार भजन, जो आपको खींचते हैं ईश्वर के नज़दीक. Amar Ujala. https://www.amarujala.com/kavya/bhajan-from-bollywood-a-lot-of-source-for-almighty-god

"Ten of my favourite Khayyam songs." (2019, September 11). Dustedoff. https://madhulikaliddle.com/2019/08/25/ten-of-my-favourite-khayyam-songs/

"Yadon Ka Karvan: Deepak Mahaan's Journey Through Memories." (2020). Prabhat Prakashan.

"ख़य्याम." (n.d.). Down Melody Lane. http://downmelodylane.com/khayyam.html

वंदन. (2019, August 19). ख़य्याम: नहीं रहे 'उमराव जान' में जान डालने वाले संगीतकार शर्मा जी. BBC News Hindi. https://www.bbc.com/hindi/entertainment-49401612